अफ़कार
(पहला हिस्सा)

मौज़ूआ़त

नाशिर : तहरीक निज़ामे मुस्तफा

आज़ादी ए अफ़कार से है उनकी तवाही
रखते नहीं जो फ़िक्र ओ तदब्बुर का सलीक़ा

अफ़कार

(पहला हिस्सा)

इस्लामी अफ़कार ओ नज़रियात पर मबनी एक फ़िक्र अंगेज़ गुलदस्ता

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

Book name : Afkaar (Magazine) Part -01

Language : Hindi

Translated by : Mohd Saqib & Kaleem Razvi

Hijri Date : 23 Ramzan ul Mubrak 1441H

English Date : 17 May 2020 (Sunday)

Publisher : Tehreek Nizam e Mustafa (India)

Any Query, contact us : 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit : archive.org/details/@tehreek_nizam_e_mustafa_

Also follow us on : Facebook || Instagram || Youtube

About Us

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza.
It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized.

It is supplicated to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

फेहरिस्त

इब्तिदा

कुब्बत ए फ़िक्र ओ अमल पहले फना होती है
फिर किसी क़ौम की शौक़त पर ज़वाल आता है

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं हैं हुकूमत उनके पास नहीं इक़्तेदार उनका खत्म हो चूका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाक़ी थी जिसे फ़िक्र कहते हैं जिस फ़िक्र को लेकर ये उम्मत मेहनत मशक़्क़त करके अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फ़िक्र ही इस क़ौम के दिलों से खत्म होती जा रही है और ये क़ौम गैरों की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ खत्म हो चूका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं ? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िन्दगी

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रोकर गिड़गिड़ाकर माफ़ी मांगने का था के हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते के या अल्लाह हमें माफ़ फ़रमादे हमें दरगुज़र फ़रमादे हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे अहकाम की पाबन्दी नहीं की इस लिए हम पर ये मुसीबतें आयी हुई हैं

ये तो वक़्त अपने प्यारे नबी ﷺ की बारगाह में रुजू करने का था और आप के सदक़े अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमारा नफ़्स हमसे कह रहा है

इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मक़सद सिर्फ और सिर्फ ये है के उम्मत ए मुस्लिमा की फ़िक्र को नयी ताज़गी दी जाये और जो बुराईयां और नफ़रतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुज़दिली हमारी पहचान बन चुकी है इन सब को खत्म करने की कोशिश की जाये ये तभी हो सकता है के मुआशरे का हर इंसान बुराईयों को मिटाने के लिए जद्दोजिहद करे और इस को अपना एक अहम फ़रीज़ा समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोये हुए दिन वापस पा लेंगे ज़रूरत है क़ौम की फ़िक्र ओ अमल पर काम करने की

पढ़ने वालों से गुज़ारिश है के इस मैगज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इस से सबक़ हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम के मुताबिक़ अमल करने की ज़रूरत है इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मक़सद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाले अल्लाह की तौफ़ीक़ से इन तालीमात पर अमल करें अल्लाह हमारा हामी ओ मददगार हो

मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

इस्लाम में बाहमी हुक़ूक़ और भाईचारा

अज़ - अल्लामा हाफ़िज़ जनाब तौहीद अहमद खान रज़वी साहब क़िब्ला

इस्लाम ने हुकूक उल इबाद की तालीम जिस अंदाज़ से दी है अगर इसमें लोग कोताहदस्ती से काम ना लें बल्कि इसको पूरे तौर पर अदा करें तो फिर आपसी इख़्तिलाफ वा इंतिशार बिल्कुल ख़तम हो जाए और स्वालेह मुआशरा तश्कील पाए इस्लाम में किसी अमीर को किसी ग़रीब पर किसी गोरे को किसी काले पर किसी अरबी को अजमी पर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं अगर फ़ज़ीलत हासिल है तो तक़्वे की वजह से है

इरशाद ए रब्बानी है:

बेशक अल्लाह के यहां ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है

(कंजुल ईमान 26)

और फरमान ए रसूल ﷺ है:

ऐ लोगो खबरदार तुम्हारा परवरदिगार एक है, खबरदार तुम्हारा बाप एक है, खबरदार किसी अरबी को अजमी पर कोई फज़ीलत नहीं अलावा तक़्वे के, अल्लाह के नजदीक तुम में ज़्यादा मोअज़्ज़ज़ और मोहतरम वो है जो तुम में सबसे ज़्यादा मुत्तकी है

इंसान पर दो तरह के हुकूक आयद होते हैं

1) हुकूक उल अल्लाह **2) हुकूक उल इबाद**

हुकूक अल्लाह की पामाली की सूरत में अल्लाह तआला माफ़ कर सकता है अगर माफ़ कर दे तो ये उसका फज़्ल है और उस पर अज़ाब या सज़ा दे तो ये उसका इंसाफ है हुकूक उल इबाद की पामाली की सूरत में जब तक वह बंदा के जिस का हक तलफ किया गया है माफ ना कर दे अल्लाह भी माफ नहीं करेगा इस्लाम ने जिस तरह हुकूक उल इबाद को अदा करने का हुक्म दिया है और दीनों में मफकूद है आइए नज़र डालते हैं कि इस्लाम ने हुकुक उल इबाद को किस तरह अदा करने का हुक्म दिया है

वालिदैन (माँ बाप) के हुकूक:

वालिदैन के हुकूक को दो किस्मों में तक्सीम किया जा सकता है

1- हयात में वालिदैन के हुकूक

2- इंतेक़ाल के बाद वालिदैन के हुकूक

हयात में वालिदैन के हुकूक:

कुरान ए करीम और आहदीसे करीमा में वालिदैन के हुकूक की बहुत ज़्यादा ताकीद आई है तुम्हारे रब ने हुक्म दिया:

के उसके सिवा किसी को न पूजो और अपने मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर तेरे सामने उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनसे हूं ना कहना और उन्हें न झिड़कना और उनसे ताज़ीम की बात कहना

(कंजुल ईमान, पारा 15)

और दूसरी जगह इरशादे रब्बानी है:
और अल्लाह की बंदगी करो और उसका शरीक किसी को ना ठहराओ माँ बाप से भलाई करो
(कंजुल ईमान, पारा 5)

इन दोनों आयात में अल्लाह तबारक व तआला ने इंसान को इस बात की ताकीद फरमाई है के वह अपने वालिदैन के साथ नेकी और भलाई करे और जहां तक हो सके उनकी राहत और आशाइस के लिए कोशां रहे

हजरत अबू हुरैरा रजि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है:
की एक आदमी ने रसूल अल्लाह से अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह मेरे हुस्न ए सुलूक (अच्छे आचरण) का सबसे ज़्यादा हकदार कौन है? आपने फरमाया तेरी मां उसने अर्ज़ किया उसके बाद, आप ने फरमाया तेरी मां, उसने फिर अर्ज़ किया उसके बाद, आपने फरमाया तेरी मां उसने फिर अर्ज़ किया, उसके बाद आप ने फरमाया तेरा बाप (बुख़ारी)

इस ज़्यादती के यह मायने हैं कि ख़िदमत करने में मां को बाप पर तर्जीह (बढ़ाबा) दे और ताज़ीम बाप की ज़्यादा करें क्योंकि वह इसकी मां का भी हाकिम है इस हदीस शरीफ से सबक हासिल करें वह नौजवान जो मां-बाप को तकलीफ देते हैं और ज़रा ज़रा सी बात पर तानाज़नी करते हैं क्या उन्होंने मंदरजा वाला हदीसे पाक नहीं सुनी है
मुस्लिम शरीफ की हदीस है:
हुज़ूर पाक ने 3 मर्तबा इरशाद फरमाया उसकी नाक खाक आलूदा हो हजरत अबू हुरैरा रजि अल्लाह तआला अनहो ने अर्ज़ किया या रसूलअल्लाह किस की ? सरकार मुस्तफा ने इरशाद फरमाया जिसने बूढ़े मां-बाप को पाया या उनमें से किसी एक को पाया और उनकी ख़िदमत करके जन्नत हासिल ना कर सका (मुस्लिम शरीफ जिल्द 2)

एक मर्तबा हुज़ूर अकरम से लोगों ने पूछा वालिदैन का अपनी औलाद पर क्या हक़ है आपने इरशाद फरमाया वह दोनों तेरी जन्नत और दोजख़ हैं (मिश्कात शरीफ)

अगर तू अपने वालिदैन की ख़िदमत करेगा तो जन्नत में चला जाएगा और वालिदैन की नाफरमानी करेगा तो तुझे दोजख़ में डाल दिया जाएगा ख़ुलासा कलाम यह के उनको आराम पहुंचाने और खुश रखने के लिए हमा वक्त कोशिश करता रहे अपनी कुदरत भर राहत रसाई की फिक्र के साथ उनके लिए दुआ भी करता रहे ऐ मेरे परवरदिगार उनको पूरी तरह राहत

पहुंचाना तो मेरे बस की बात नहीं तू अपने फज़ल ओ करम से उनकी तमाम मुश्किलात और तकलीफ दूर फरमा दे

इंतेकाल के बाद वालिदैन के हुकूक:

1- सबसे पहला हक उनके जनाज़े की तजहीज़ ओ तकफीन और तदफ़ीन (कफ़न देना और दफ़न करना) है

2- उनके लिए मग़फिरत वा बख्शिश की दुआ हमेशा करते रहना उससे भी ग़फलत ना बरतना

3- उनके उपर कोई फ़र्ज़ बाक़ी रह गया हो तो उसको बा कद्र ए ताक़त उसकी अदायगी की कोशिश करना

4- हसब ए ताक़त सदका ओ खैरात अमाल ए सालेहा का सवाब उन्हें पहुंचाता रहे

5- उन पर किसी का कर्ज़ हो तो उसको जल्द अदा करने की कोशिश करना

6- उन्होंने जो जाइज़ वसीयत की हो जहां तक मुमकिन हो उन्हें नाफ़िज़ करने की कोशिश करे

7- हर जुमा उनकी क़ब्र की ज़्यारत के लिए जाना और वहां यासीन शरीफ़ पढ़ना और उसका सवाब उनको बख़्शना

8- उनके रिश्तेदारों के साथ नेक सुलूक करना उनका एहतराम करना

9- कभी किसी के मां- बाप को बुरा कहकर बदले में उन्हें बुरा ना कहलवाना

10- कभी कोई गुनाह करके उन्हें क़ब्र में रंज ना पहुंचाना उसके सब आमाल की ख़बर मां बाप को पहुंचती है नेकियां देखते हैं तो खुश होते हैं और गुनाह देखते हैं तो रंजीदा होते हैं

औलाद के हुकूक:

वालिदैन पर बच्चों की पैदाइश के वक़्त से हुकूक की अदायगी का सिलसिला शुरू हो जाता है नबी अकरम ने इरशाद फरमाया:

जब बच्चा पैदा हो तो कान में अज़ान दी जाए तहनीक करे उम्दा नाम तजवीज़ करे और जब कुछ बोलने के लायक हो तो कलमा ए तय्यब का विर्द कराने की कोशिश करे और अगर हो सके तो अक़ीक़ा भी कराया जाए

औलाद की तालीम ओ तरबियत के ताल्लुक़ से नबी करीम ने कसरत से तर्ग़ीब दिलाई है क्योंकि इसमें बच्चो का रौशन मुस्तकबिल है हुज़ूर का इरशाद ए आलीशान है:

मुसलमानो अपनी औलाद की तरबियत अच्छी तरह करो (तबरानी)

दूसरी हदीसे पाक में है बाप अपनी औलाद को जो कुछ दे सकता है उसमें सबसे अच्छा अतिया अपनी औलाद की तालीम ओ तरबियत है (मिशकात)

औलाद की तालीम और तरबियत के ताल्लुक से आला हजरत फाज़िले बरेलवी का यह क़ौल मुलाहिज़ा फरमाएं:
ज़ुबान खुलते ही अल्लाह अल्लाह फिर ला इलाहा इल्लल्लाह और फिर पूरा कलमा सिखाएं जब तमीज़ आये अदब सिखाएं खाना-पीना, हंसना बोलना, उठने बैठने, चलने फिरने, हया लिहाज़, बुजुर्गों की ताज़ीम, मां-बाप, उस्ताद और दुख्तर को शौहर की इताअत के तुर्को आदाब बताये, कुरान ए मजीद पढ़ाये, उस्ताद नेक स्वालेह सुननी सही हुल अकी़दा के सुपुर्द करे और दुख्तर को नेक परसा औरत से पढवाये, बाद खत्मे कुरआन हमेशा तिलावत की ताकीद करे अक़ाइद ए इस्लाम और सुन्नत सिखाए के लौह ए सादा फितरत ए इस्लामी व कुबूल ए हक़ पर मख्लूक़ है, उस वक्त का बताया पत्थर की लकीर होगा, हुजूर अक़दस की मोहब्बत व ताज़ीम उनके दिल में डाले के असले ईमान व ऐन ए ईमान है हुज़ूर के आल व असहाब, औलिया अल्लाह, उल्मा की मोहब्बत व अज़मत तालीम करे के असले सुन्नत व ज़ेबर ए ईमान बल्कि बाएस ए बक़ा ए ईमान है, 7 बरस की उम्र से नमाज़ की ज़ुबानी ताकीद करे, इल्म ए दीन खुसुसन गुस्ल वुज़ू, नमाज़ रोज़े के मसाइल, तवक्कुल, कनाअत ज़ुहद ओ अखलाक, अमानत, सिदक, अदल, हया, सलामत ए सुदूर ओ लिसान वगैरह खूबियों के फज़ाइल, हिरस व तमअ, हुब्बे दुनिया व हुब्बे जाह, रिया ओ उजब, तकब्बुर व ख़यानत किज़्ब ओ ज़ुल्म, फहेश ओ गीबत, हसद ओ कीना, वगैरह बुराइयों के रज़ाइल पढ़ाये, पढ़ाने में नरमी बरते, मौके पर चश्म नुमाई, तंबीह व तहदीद करे मगर कोसना ना दे, के कोसना उनके लिए इसलाह का सबब नहीं होगा बल्कि फसाद का अंदेशा है मारे तो मुंह पर ना मारे अक्सर औकात तहदीद व तखबीफ पर क़ानेअ रहे, कोढ़ा क़मची उसके पेशे नज़र हो ताकि दिल में रोब रहे ज़माना ए तालीम में एक वक़्त खेलने का भी दे के तबीयत पर निशात बाक़ी रहे मगर कभी बुरी सोहबत में ना बैठने दे के यार बद मार ए बद से बदतर है

(फतावा रज़विया जिल्द 9 मतबुआ क़दीम)

हमें चाहिए इन हिदायात के मुताबिक़ अपनी औलाद की परवरिश करें ताकि वो दोनो जहान में कमियबी हासिल कर सकें

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के हुकूक:

हदीस: हज़रत अली रजि अल्लाह तआला अन्हू से मरवी है के एक मर्तबा हुज़ूर अकरम ने इरशाद फरमाया:

एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर 6फ़र्ज़ हैं

1) जब उससे मिले तो सलाम करे
2) जब वो बुलाए तो हाज़िर हो
3) जब वो छींके तो जवाब दे
4) जब वो बीमार हो तो अयादत करे
5) जब वो मर जाए तो उसके जनाज़े में शरीक हो
6) जो चीज़ अपने लिए पसंद करे वो उसके लिए पसंद करे

हुज़ूर ने फरमाया:
के कामिल इंसान वो है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें (बुख़ारी)

दूसरी हदीस शरीफ में है अबू हुरैरा रजि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है हुज़ूर अकरम ने फरमाया:
क्या तुम्हें मालूम है मुफलिस कौन है? लोगों ने अर्ज़ किया हम में मुफलिस वो है जिनके पास ना पैसे हों ना सामान, हुज़ूर ने फ़रमाया मेरी उम्मत में मुफलिस दरअसल वो शख़्स है जो क़यामत के दिन नमाज़, रोज़ा, ज़कात लेकर आए इस हाल में के उसने किसी को गाली दी हो किसी पर तोहमत लगाई हो किसी का माल खा लिया हो किसी का ख़ून बहाया हो किसी को मारा हो तो अब उसको राज़ी करने के लिए उस शख़्स की नेकियां उन मज़लूमों के दरमियान तकसीम की जाएंगी, पस उसकी नेकियां ख़तम होने के बाद भी अगर लोगों के हुकूक बाक़ी रह जाएंगे तो अब हकदारों के गुनाह लाद दिए जाएंगे यहां तक के उसे दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा (मुस्लिम जिल्द 2)

इस हदीस ए पाक से इबरत हासिल करें वो लोग जो सरे आम दूसरे लोगों को गालियां देते हैं और उन्हें शर्म भी महसूस नहीं होती
एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर ये भी हक़ है के उसकी ग़ीबत ना करे ग़ीबत के मुताल्लिक़ क़ुरआन करीम और अहादीस ए करीमा में सख़्त बईद आई हैं
इरशाद ए रब्बानी है:
और एक दूसरे की ग़ीबत ना करो क्या तुम में कोई पसंद रखेगा के अपने मरे भाई का गोश्त खाए तो ये तुम्हे गवारा ना होगा (कंज़ुल ईमान, पारा 26)

ख़ुदा तआला से दुआ है के हमें हुक़ूक़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फरमाए आमीन

जहेज़ के लालची लोग

अज़: अल्लामा मौलाना जावेद रज़ा मरकज़ी साहब क़िब्ला

कहा जाता है के जब किसी काम में लोग हद से आगे जाते हैं तो वो चीज़ हद से गुज़रने वालों के लिए जान का वबाल बन जाती है मुसलमानो में जिस तरह आज जहेज़ ने एक विकराल रूप ले लिया है उस से हर एक आशना है आज अगर हम समाज को तीन हिस्सों में करके देखें एक जो ग़रीब तबका है एक जो दरमियानी तबका है और एक जो खूब मालदार तबका है अब जरा सोचो आज मुसलमानों में ज़्यादातर मजदूरी या छोटे कारोबार करने वाले हैं

अब हम असल बात पर आते हैं जहेज़ और इसके लालची लोगों ने हमारा क्या हाल कर दिया है?

ज़्यादा जहेज़ मिलने के लालच में हम दीनदारी, पाक दामनी और परहेज़गारी नहीं देखते बल्कि हम जहेज़ को देखते हैं इसका असर समाज पर यह पढ़ा कि दीनदारी परहेज़गारी और पाक दामनी जैसी चीज़ें समाज में बे मायने होकर रह गईं हैं अगर हम लोग निकाह करने में फरमान ए मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अमल करते के **दीनदार औरतों से निकाह करके कामयाबी हासिल करो** अगर लोग इस पर अमल शुरू कर देते तो उम्मीद है कि मुआशरे में बहुत तेज़ी के साथ बदलाव आ जाते आज जहेज़ की बढ़ोतरी ने लोगों की रातों की नींद और दिन का चैन बर्बाद कर दिया मगर अफसोस लोग इस मुसीबत में जिंदगी गुज़ार रहे हैं लेकिन उसको छोड़ने को तैयार नहीं इस जहेज़ के लालच का असर कौम के बच्चों की तालीम पर भी बुरा पड़ता है तालीम पर बुरा असर किस तरह पड़ता है इसको एक मिसाल से समझते हैं

एक घर में अगर दो-तीन बच्चियां हो और दो लड़के हो और कमाई के जरिए भी महदूद हो तो वह लड़के कुछ बड़े हो फिर क्या? वालिद और लड़के सब मिलकर खुद लड़कियां भी बस एक ही चीज़ के लिए पैसा जमा करते हैं और वह है जहेज़, और यह हाल एक घर का नहीं बल्कि घर घर का है यह वह हकीकत है जिसका इनकार नहीं किया जा सकता

ऐ मिल्लत के जवानों! जरा सोचो इस एक फ़िज़ूल खर्ची ने हमारे अक्सर जवानों को मजदूरी की तरफ धकेल दिया है अब इसको दुरुस्त करने कौन आएगा? जो आपको बताएगा ज़रूरत है आज ऐसे मुख्लिस बा हिम्मत और अच्छी फिक्र रखने वाले नौजवानों की जो सामने आए और बगैर जहेज़ वाली शादियों का ऐलान करें और अपने घर की बच्चियों के रिश्ते भी बगैर जहेज़ के करें

ज़िना को फ़रोग़:

इंसान के अंदर अल्लाह तआला ने ये ख्वाहिश रखी है चाहें वो मर्द हो या औरतें उसका एक वक़्त आता है और उस वक़्त खुद को संभालना मुश्किल होता है बहुत कम होते हैं जिनके दिल ख़ौफ ए ख़ुदा से लरज़ते हैं तो वो बच जाते हैं मगर कुछ ज़िना में या दीगर हराम कामों में

गिरफ्तार हो जाते हैं अब ज़रा सोचो तो मुसलमानो हमारे इस जहेज़ के लालच ने हमारे जवानों को कैसी तबाही के दहाने पर लाकर खड़ा किया है? आए दिन ज़िना के बढ़ते केस हमें जगा नहीं रहे, कब जागोगे? कब सुधरोगे ? कब अपने बच्चो को हराम कामों से रोकने की तरफ तवज्जो करोगे ?

क़र्ज़ों की फरावानी:

इस जहेज़ ने लोगों को काफी हद तक सूदी कर्ज़ों में मुब्तिला कर दिया है लोग अपनी शान को दिखाने के लिए अपनी बिसात से ज़्यादा खर्च करते हैं और इन खर्चों को पूरा करने के लिए जिस तरह भी हो सके पैसा जमा करते हैं यहां तक वो कार्ज़दार हो जाते हैं फिर कई साल तक इसको भरते रहते हैं और ज़ाहिर है ये सूदी क़र्ज़ कहां से हासिल करते हैं अफ़सोस आज इस पर लोग सिर्फ बोल रहे हैं मगर अमली ज़िन्दगी में वह सब चल रहा है जिसने ज़िंदगियां तबाह की हुई हैं

जहेज़ देने वालों की तारीफ़ क्यों ?:

हमारे दरमियान कसीर तादाद उन लोगों की है जिनका काम सिर्फ बोलना है आप देखो अगर कोई अपनी ज़मीन, मकान बेच कर अपनी शादी में कसीर रकम खर्च कर दे तो लोग उसकी तारीफ करना शुरू कर देते हैं

इसके बर अक्स अगर कोई कम खर्च पर शादी करे तो लोग उसकी मज़म्मत करते दिखाई देते हैं मुख्तलिफ क़िस्म के तानों से जगह जगह ज़लील किया जाता है आखिर हम अपने समाज को किस तरफ धकेल रहे हैं आखिर कब हम लोग इन बुराइयों की मज़म्मत करेंगे ?

अगर हम लोग हर तरह से उन लोगों की तारीफ करे उन लोगों को इज़्ज़त ज़्यादा दें जो सुन्नत के मुताबिक़ कम खर्चों में अपनी शादियां करते हैं इससे भी लोगों में कुछ ना कुछ बेदारी ज़रूर आएगी !

बड़ा दुःख होता है जब ये सुनने को मिलता है के किसी कि बहन किसी कि बेटी का घर महज़ इस वजह से टूटता है के उसके वालिदैन ने घर भर कर जहेज़ नहीं दिया होता और लोग उसका ताना मरते हैं अब वो वालिद जिसने फूल की तरह अपनी बच्ची को पाला है उसपर क्या गुज़रती है जब जहेज़ के लालची लोग उस पर ज़ुल्म ओ सितम के पहाड़ तोड़ते हैं खुद को भी उस जगह रखकर देखें

कुछ लोग देखा देखी जहेज़ मुख़ालिफ बातें करते हैं मगर दिल उसी तरफ लगे होते हैं अफ़सोस नौजवानों की हालत पर जिसकी सोच और फिक्र इतनी आला होनी चाहिए थी के एक परिवार की नहीं बल्कि अपनी कमाई के ज़रिए कितने ग़रीबो की किफ़ालत के ज़िम्मेदार होते, मगर वो खुद कासा ए गदाई लेकर दूसरों के दरवाज़े पर खड़े दिखाई देते हैं ये मफ्लूज मिल्लत नौजवान आखिर क्या कर सकते हैं जबकि ये अपने लिए भी दूसरों पर मौकूफ हैं

आखिर में इन लोगों से भी गुज़ारिश है के जिन को ठीक ठाक दीनदार घराने और लड़के मयस्सर आते हैं मगर दौलत का भूत उनको चढ़ा होता है लोगों में अपनी शान दिखाने को खूब खर्च करते हैं और अपनी वुसअत से ज़्यादा खर्च कर देते हैं और फिर परेशान होते हैं

अल्लाह की ज़ात पर भरोसा करके अगर कोई दीनदार घराना मयस्सर आए और वो जहेज़ को मना करे तो मान जाएं और मुआशरे को सुधारने में हिस्सेदार बनें
याद रखो चैन खर्चों से नहीं मिलता बल्कि चैन अल्लाह के दस्ते क़ुदरत में है

औलाद की तरबियत एक अहम ज़िम्मेदारी

अज़- अल्लामा मौलाना जावेद रज़ा मरकज़ी साहब क़िब्ला

मुस्तक़बिल रोशन होने के लिए नस्लों का अच्छा होना ज़रूरी है इस्लाम में हर चीज की तरफ रहनुमाई फरमाइ गई है इस्लाम में औलाद के ऊपर वालिदैन के हुकूक हैं तो वालिदैन के ऊपर औलाद के हुक़ूक़ भी हैं

किसी कौम का मुस्तक़बिल क्या होगा इसके लिए आप उस क़ौम में बच्चों की तालीम ओ तरबीयत पर नज़र करें तालीम और तबीयत जिस कदर आला होगी उसका मुस्तकबिल भी उतना ही रौशन होगा

आज इस कदर लोगों में दीन से दूरी है के आप उनको कैसी भी तकरीर सुनाओ किसी के पास ले जाओ मगर हाल वही है जो पहले था बलके दिन बा दिन हालात खराब होते जा रहे हैं जबकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक अहम जिम्मेदारी दी है कोई भी मां बाप इससे छूट नहीं सकते

इरशाद ए रब्बानी है:

ए ईमान वालों अपनी जानो और अपने घरवालों को आग से बचाओ

यहां से एक बात ख़ूब वाज़ेह हो जाती है कि अपनी औलाद की इस्लाह के लिए ज़रूरी है कि पहले वालिदैन अपनी इस्लाह करें आज हर मां-बाप अपने बच्चे को एक पढ़ा-लिखा बा अदब और नेक देखना चाहते हैं तो क्या यह मुमकिन है कि आप खुद नमाज़ ना पड़े, और आप की औलाद नमाज़ी हो जाए, आप खुद घर के अंदर बच्चों की मम्मी को गंदी और फहश गालियां दे और आप उम्मीद करें आप की औलाद गालियां देने वाली ना हो, आप रात में कसीर वक्त मोबाइल में लगे रहें फिल्में ड्रामे देखें और आप उम्मीद करें कि आप की औलाद रात को पढ़ा करे, आप खुद झूठ बोलें और बच्चों से उम्मीद करें के वह सच बोलें, बच्चों की अम्मी खुद बाजारों में बेपर्दा घूमे और बच्चों से परदादारी की तबक्को रखें, आप किस तरह उम्मीद कर सकते हैं आपके बच्चे आपके साथ अच्छा सुलूक करेंगे जब के आप अपने वालिदैन के साथ बुरा सुलूक करें, देखो अल्लाह ने इरशाद फरमाया खुद की जानो को जहन्नम से बचाओ और फिर अहल का ज़िक्र फरमाया ! साफ है पहले खुद ख्वाहिशों पर काबू पाओ तब जाकर आप की औलाद आपकी बात मानेगी

किसी ने ठीक ही कहा है बच्चे अपने बाप की तकलीद करते हैं आप खुद देखो आप कैसे हो ?

यहां चंद बातें मैं लिखता हूं जो ज़रूरी हैं के हम अपनी औलाद की तरबियत कैसे करें ?

1)बच्चा जब पैदा हो तो उसका अच्छा नाम रखना उसके मां बाप के ऊपर है:

हदीस: **वालिद पर बच्चे के हुकूक से यह है के वह उसका अच्छा नाम रखें कयामत के दिन उसके नाम से पुकारा जाएगा और तुम्हारे आवा के नाम से, तो तुम अच्छे नाम रखो** (अबु दाऊद)

मगर अफसोस आज ऐसे नाम रखे जाते हैं जिनको सुनकर अजीब महसूस होता है

2)बच्चा बोलना शुरू करे तो क्या करे:
ज़रा आज का माहौल देखो कोई गाने सिखाता है कोई फहशगोई तो कोई कुछ और गोया के हमारे मुआशरे में इस तरफ संजीदगी नहीं हम अपने मज़हब से इसमें रहनुमाई हासिल करें तो मालूम हो के इस्लाम इसमें क्या रहनुमाई करता है?
हदीस: **यानी सबसे पहले कलमा ला इलाहा इल्लल्लाह शुरू करवाओ**

हम में कितने लोग इस पर आमिल हैं बहुत अहम बात बच्चों को अखलाक ए रज़ीला और बुरी बातों से दूर रखना मां - बाप की एक अहम ज़िम्मेदारी है के अगर बुरी बातें लग रही हैं तो उसका ज़िम्मेदार कौन होगा? मां बाप होंगे
ये वालीदैन की जिम्मोरियां हैं के वो बच्चो में अखलाक रज़ीला और आदत ए क़बीहा से नफ़रत पैदा करें

3)बच्चों को ग़लत ग़िजा से बचाना:
आज आम तौर से देखा जाता है के हमारे बच्चों को रास्ते से अगर कोई चीज दस्तयाब हो जाए और वो अपने वालिदैन को दिखाएं तो वालिदैन उसको नज़र अंदाज़ कर देते हैं ज़रा गौर तो करो शरियत का हुक्म क्या है और आपकी क्या ज़िम्मेदारी बनती है ?
आम तौर पर गांव देहात में देखा जाता है के बच्चा किसी के खेत से बालें ले आता है मगर वालिदैन बच्चों को बग़ैर रोक टोक के एसे करने देते हैं अब इसका जवाबदेह कयामत में कौन होगा? और बच्चे में इस नाजाइज़ खाने से ख़ून बनेगा उसका असर क्या पड़ेगा?

आइए मै आपको नबी ए रहमत मोहसिन इंसानियत का एक फरमान बताता हूं जो खाना नाजाइज़ ना हो उसको सख्ती से रोकना किसकी ज़िम्मेदारी है?
हजरत अबू हुरैरा रजि अल्लाह तआला अन्हू से रिवायत है
फरमाया: **हजरत हसन बिन अली रजि अल्लाह तआला अन्हो ने एक खजूर सदके की खजूरों में से अपने मुंह में डाल ली हुज़ूर ने फरमाया रुको रुको उसे बाहर फेंको उसे बाहर फेंको क्या आपको मालूम नहीं कि हम सदका नहीं खाते** (बुखारी 1491)

अब आप जरा गौर फरमाइए जो लोग यह कहते हैं एक या दो बार से क्या होगा यह हम लोगों के लिए कितनी बड़ी तालीम है कि हम अपने बच्चों के मुंह में नाजायज खाने का एक लुकमा भी ना जाने दे
आज बच्चे कोई भी लिबास पहन लें लेकिन हम उनको रोकते ही नहीं हैं और तो और बल के हम अपने बच्चों को उरयानियत वाला लिबास पहने देखकर खुश होते हैं जब के हमको तो यह करना चाहिए जो एक सहाबी ए रसूल ने किया
हजरत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद ने लड़के पर रेशम की एक कमीज देखी तो आपने उसको फाड़ दिया और फरमाया यह औरतों के लिए है (इब्ने अबी शैबा)

क्या आज हम अपने बच्चों की ऐसी तरबीयत कर रहे हैं?
घर को आलात लहव ओ लयेब से पाक रखना ज़रूरी है
अगर वह हमारे घरों में रहेंगे तो हमारे बच्चों पर इसका बुरा असर ही पड़ेगा
अपने घरों में कुरआन की तिलावत का एहतमाम करो जिस घर में कुरान की तिलावत हो उससे श्यातीन भाग जाते हैं
अपने घरों को कब्रगाह ना बनाओ बेशक जिस घर में सूरह बक़रा की तिलावत होती है उस घर से शैतान भाग जाता है (मुस्लिम)

४)बच्चों को नमाजी बनाने का तरीका:
एक बात यह भी है कि बच्चों को किस तरह नमाज़ी बनाया जाए? तो उसमें हम अपने नबी करीम सल्लल्लाहो तआला अलेही वसल्लम की तालीम को देखें अगर आज वालीदैन इस पर अमल करें तो बच्चे नमाज़ी हो जाएं
फरमाया नबी करीम सल्लल्लाहो तआला अलेही वसल्लम ने:
जब बच्चा 7 साल का हो जाए तो उसको नमाज़ पढ़ने का हुक्म दो और जब 10 साल का हो जाए तो नमाज़ ना पढ़ने पर मारो (अबू दाऊद, 492)

अब ज़रा आशिकाने मुस्तफा अपने सीने पर हाथ रखकर बताएं क्या आपने इस फरमाने आलीशान पर अमल किया?

५) तालीम देना:
हर तरह तालीम देना ज़रूरी है औलाद को अगर मकान और दीगर चीजें ना दी जाए तो बच्चों का मुस्तकबिल बर्बाद नहीं होगा मगर तालीम ना देने से सारी जिंदगी तारीक हो जाती है हमारी कौम का जो हाल है उसके ज़िम्मेदार वालिदैन हैं के अपनी ज़िम्मेदारियों का हक अदा नहीं किया है और आगे कौम में जिहालत और दीन से दूरी बढ़ रही है इन सब के ज़िम्मेदार वालिदैन हैं के औलाद की अच्छी तालीम ओ तरबीयत की ज़िम्मेदारी उनकी थी जिससे वह भागे, और भाग रहे हैं जब तक वालिदैन अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं करेंगे तब तक एक अच्छा मुआशरा बन ही नहीं सकता
आज बहुत सारे लोग तावीज़ वालों के पास चक्कर लगाते हैं कि बेटा नाफ़रमान है कहा नहीं मानता, गालियां देता है और नाफरमानी करता है अब आप कुछ ऐसा कर दीजिए कि वह फरमाबरदार हो जाए मगर खूब जान लो जब आपने उसकी तरबीयत इस्लामी तरीके से नहीं की है तो यह परेशानी भी आपको ही उठाना पड़ेगी
लोगों अगर कौम का रौशन मुस्तकबिल चाहते हो तो अपनी ज़िम्मेदारी अदा करो और अपनी औलाद की तरबियत इस तरह करो जिस तरह हमारे नबी करीम ने रहनुमाई फरमाइ है

दीन आसान है

अज़: अल्लामा मौलाना जावेद रज़ा मरकज़ी साहब क़िब्ला

ये बात शवाहिद से ज़ाहिर है के मजहब ए इस्लाम जिस तेज़ी के साथ पूरी दुनिया में फैला और लोगों ने इसको क़बूल किया, काले-गोरे, अमीर-गरीब, पढ़े लिखे-गैर पढ़े लिखे, कारोबारी, साइंसदां, मशक्कत कश गोया के इस्लाम के मानने वालों में हर किस्म के लोग मिल जाएंगे हर एक के लिए यह दीन आसान है

आप गौर करें कि इस्लाम को अल्लाह ने अपने बंदों के लिए आसान कर दिया

खुद अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है:

अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उसकी ताकत भर (सूरह बकरा कंज़ुल ईमान)

मगर अफसोस सद अफसोस आज बहुत सारे लोग आपको यह कहते हुए मिल जाएंगे के दीन पर कौन चल सकता है? और बाज़ लोग तो इससे भी ज़्यादा सख्त ज़ुबान को इस्तेमाल करते हैं के अगर दीन पर चले तो रोटी ना मिले अल्लाह हु अकबर

ज़रा ग़ौर तो कर मुसलमान यह ज़ुबान क्या ईमान वालों की ज़ुबान हो सकती है?

क्या कोई अल्लाह का खौफ रखने वाला इस तरह की बात ज़ुबान पर लाना तो दूर सोच भी सकता है?

फरमान ए मुस्तफा सल्लल्लाहो अलेही वसल्लम है:

इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर क़ायम की गई

अव्वल गवाही देना अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के सच्चे रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करना और ज़कात अदा करना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना

यहां जिन पांच चीज़ों का जिक्र किया गया है जिसमें कलमा पढ़ कर इंसान इस्लाम में दाखिल होता है और नमाज़ हर इंसान पर फर्ज़ करार दी गई बल्कि नमाज़ हर वक्त नहीं दिन में सिर्फ 5 वक्त फर्ज़ की गई

दूसरा रोज़ा रखना है जो हर साल पूरे साल में सिर्फ एक माह के फ़र्ज़ किए और इसमें भी अल्लाह ने मुसाफिर और बीमार को छूट अता फरमाई

अब बात आती है ज़कात की तो वह अल्लाह ने गरीबों पर नहीं बल्कि जो शरीयत के नज़दीक मालदार है उन पर फर्ज़ की वह भी साल में एक बार

अब बारी आई हज की तो वह भी अल्लाह ने उन पर फर्ज़ किया जो मालदार हो और इस्तिताअत रखते हो वह भी पूरी जिंदगी में एक बार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ज़रा गौर तो कर अल्लाह और उसके रसूल ने हमें जो हुक्म दिया है वह हमारी ताक़त से बाला तर नहीं जिस पर अमल ना किया जा सके इस वज़ाहत से इतना तो समझ आ ही गया होगा कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो काम बताए वह हमारी ताकत से क़तअन बाहर नहीं

बहुत सरी चीज़ें हम करते हैं मगर उसके बारे में हम रहनुमाई हासिल नहीं करते जैसे मरने वाले के घर वाले आज जिस तरह खर्च करते हैं अगर इसमें हम अपने उल्मा से रहनुमाई हासिल करके शरियत के मुताबिक़ खर्च करें तो हमें हर तरह से सुकून मयस्सर आएगा

आप करो तो ठीक मेरे भाइयों आपको मालूम हो जाएगा के परेशानी शरियत के मानने में नहीं बल्कि उस बात में है जो आप नहीं मान रहे हैं
इसी तरह देखा जाए तो शादी में हम ने जिस तरह अपने ऊपर मुसीबत मुसल्लत की है अल अमान अल हफीज़
क्या आपने इस क़दर इख़राजात के बारे में किसी किताब में पढ़ा है.? नहीं
तो आप परेशान शरियत की वजह से नहीं हैं बल्कि दीन की बात को छोड़ने की वजह से हैं

बस ख़ुलासा ये है के आप अपनी ज़िंदगी जो गुज़ार रहे हैं इसमें गौर कर लें और अपने उल्मा से दरयाफ़्त कर लें इंशा अल्लाह आप इस तरह की बातें नहीं करेंगे के दीन पर कोन चल सकता है.?
दीन ए मुस्तफा अब क़यामत तक के लिए है हर इलाक़े के लिए है हर कौम के लिए है हर ज़ुबान (Language) वाले के लिए हर छोटे बड़े मज़दूर हकीम के लिए है
आज जो हम पर मुसीबत आ पड़ी है वो दीन को छोड़कर है, ना के दीन पर चलकर.!

मुसलमानों में बुज़दिली क्यों ?

अज़: अब्दे मुस्तफा अल्लामा मौलाना जनाब मोहम्मद साबिर इस्माईली कादरी रज़वी साहब किबला

सवाल है कि मुसलमानों में बुज़दिली क्यों है ?
इसका जवाब अगर मुख़्तसिर अल्फ़ाज़ में दिया जाए तो यही है कि मुसलमानों के अंदर शौक़ ए शहादत और राहे ख़ुदा में कुर्बान होने का जज़्बा बाक़ी नहीं रहा और मौत का ख़ौफ इस कदर हो चुका है कि जिंदगी बचाने और ज्यादा जीने की तमन्ना लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं और अगर इसकी तफ़सील में जाएं तो बहुत कुछ कहा जा सकता है।
अबू दाऊद (4297) में एक रिवायत है-
करीब है के दीगर क़ौमें तुम पर ऐसे ही टूट पड़े जैसे खाने वाले प्यालो पर टूट पड़ते हैं हुज़ूर अकरम ﷺ से सवाल किया गया कि क्या हम उस वक्त तादाद में कम होंगे? आप ने फरमाया नहीं बल्कि तादाद बहुत होगी लेकिन तुम सैलाब के झाग के मानिंद होगे अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मन के सीनों से तुम्हारा खौफ निकाल देगा और तुम्हारे दिलों में 'वहन' डाल देगा तो अर्ज की गई या रसूलल्लाह 'वहन' क्या चीज है आप ने फरमाया यह दुनिया की मोहब्बत और मौत का डर है_।

आज हमारी तादाद तकरीबन दुनिया की एक चौथाई है और तकरीबन 50 ममालिक में हमारी अक्सरियत है और मुलके हिंद को ले लें तो तकरीबन 25 करोड़ मुसलमान इस मुल्क में रहते हैं लेकिन फिर भी जो हालात हैं वह किसी से पोशीदा नहीं है।
तारीख़ के औराक़ पर उन मुसलमानों का भी ज़िक्र मौजूद है जो अगरचे तादाद में हमसे बहुत कम थे और वसाइल की कमी थी लेकिन बड़े-बड़े जालिमों के सामने मुकाबले के लिए खड़े हो जाते थे और अल्लाह ताअला की तरफ से फ़तहयाब होते थे लेकिन आज हमारी तादाद सिर्फ सुनने, देखने की है।
बुजदिली इस कदर हमारे अंदर सिरायत कर चुकी है कि शियार इस्लाम पर खुलेआम हमला होता देख कर भी हम बस अफसोस करके रह जाते हैं।
किसी ने कहा था कि जब काबे में शैतान घुस जाएगा तब जागोगे ?
आज बाबरी मस्जिद का मामला हमारे सामने हैं, मस्जिदे अक्सा पर दुश्मनों ने नजरें गाड़ रखी हैं, कश्मीर और फलस्तीन के मुसलमानों की तस्वीरें भी नजर से गुजरती हैं, और दुनिया भर में ऐसी कई जमीनें हैं जहां मुसलमानों का खून बहाया जाता है कई इलाके ऐसे हैं जिनकी फिजाओं में मुस्लिमों की फरियाद गूंजती है लेकिन हमारी करोड़ों की तादात सिर्फ तमाशायी है मुसलमानों की ऐसी कोई रियासत नहीं जो मज़लूमों का दिफ़ाअ करें कोई ऐसी सल्तनत नहीं जिस के साए तले हमारे बच्चों का मुस्तकबिल फल-फूल सके और कोई ऐसी ताकत नजर नहीं आती जो मुसलमानों को उनका वतन वापस कर सके।

मुलके हिंदुस्तान में मुसलमान जिहाद का नाम लेने से पहले सोचते हैं, यहां होने वाले इजलास वगैरह में तकरीबन तमाम मौज़ुआत पर तकरीर होती हैं लेकिन जिहाद की जरूरत

फजीलत पर 'जिहाद कान्फ्रेंस' शायद ही कहीं देखने को मिल जाए इसके अलावा सैकड़ों की तादाद में माहनामें ,रिसाले और किताबें छपती हैं लेकिन सब ज़िक्र ए जिहाद से तकरीबन खाली हैं जुमें में होने वाली तकारीर, महाफिल ए मिलाद में होने वाला बयान और मुख्तलिफ मकामात पर होने वाले ख़िताब में ज़िक्र ए मुजाहिदीन के अलावा हर किस्म का ज़िक्र मिलता है और यही वजह है कि नई नस्ल को भी विरासत में बुज़दिली मिल रही है।

बुज़दिली पैदा होने की एक बड़ी वजह यह भी है कि जिहाद पर खुलकर बात नहीं होती और ऐसा तास्सुर दिया जाता है कि अब जिहाद की जरूरत नहीं रही मुजाहिदीन ए इस्लाम की सीरत बयान नहीं की जाती जिसकी वजह से नई नस्ल भी इसी बीमारी का शिकार हो जाती हैं नौजवानों से पूछ लिया जाए कि मोहम्मद बिन कासिम कौन थे? तो चेहरे पर इल्म ना होने का वाज़ह सबूत दिखने लगता है ,अगर सवाल करें कि सुल्तान सलाउद्दीन अयूबी कौन थे? और उनके कारनामे बताएं तो ऐसा लगता है कि किसी नामुमकिन बात का मुतालबा कर लिया हो और फिर गाजी अर तुग़रल , गाजी उस्मान, सुल्तान अल्प अरसलान, सुल्तान मोहम्मद फ़ातह, सुल्तान अब्दुल हमीद ,शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी ,औरंगजेब आलमगीर, और जुमला मुजाहिदीन इस्लाम के बारे में पूछा जाये तो ऐसा लगता है कि किसी दूसरी दुनिया के लोगों की बात हो रही है जब हमें अपनी तारीख़, अपने मुजाहिदीन और उनके कारनामे, उनकी शुजाअत और अफ़कार का इल्म ही नहीं तो जाहिर है कि हम वैसे ही बनेंगे जैसा बनाने की कोशिश दुश्मनों की तरफ से जारी है।
दुश्मनों ने क्या अच्छा मंसूबा बनाया है कि मुसलमानों को गुलाम बनाने से पहले ज़हनी गुलामी के कुएं में ढकेलना चाहिए और वह जानते हैं कि बगैर इसके मुसलमान को उनके घुटनों पर लाना मुमकिन नहीं।
आज मुसलमान खुद उस कुएँ की तरफ जा रहे हैं और वह इस तरह कि हमारे कपड़े ,हमारी ज़ुबान ,हमारा खाना, खाने का तरीका ,और हमारे अफ़कार सब उनके इशारों पर चलने वाले गुलामों की तरह हैं । वह चाहे तो फैशन के नाम पर हमें जो चाहे पहना सकते हैं ,आजादी के नाम पर जो चाहे करवा सकते हैं, इंसानियत के नाम पर जालिम और जुल्म का साथ देने वाला बना सकते हैं और अगर चाहे तो हमसे अपने ही दीन व शरीयत के मुकाबले में खड़ा कर सकते हैं।

दुनिया में जो भी हो रहा है उसके पीछे सदियों की साजिशें हैं लेकिन मुसलमानों की ज़हन को इस कदर गुलाम बना लिया गया है कि वह इसे देखने से क़ासिर हैं । इसे मुसलमान बुज़दिली नहीं बल्कि हिकमत ,मसलेहत, दूरंदेशी, इंसानियत और अमन वगैरह का नाम देते हैं और यही ज़हनी गुलामी है जिसे हमने बयान किया है। कितनी अजीब बात है कि बुज़दिली भी है लेकिन शऊर नहीं रहा और इसे अच्छा भी समझा जाता है।
मुस्लिम ममालिक को देख कर मुस्लिम ममालिक कहते हुए शर्म आती है क्योंकि बुज़दिली और साथ में ज़हनी गुलामी के आसार साफ नजर आते हैं। इस्लामी हुकूमत के तहत फिल्में

बनाई जा रही हैं लेकिन कोई पाबंदी नहीं है, यह भी एक बुज़दिली ही है जिसे हुक़ूक़ और आजादी का नाम दिया जाता है। सिनेमाघरों की कसरत , बेपरदगी की इजाज़त ,और जुआ-शराब ,ज़िना वगैरह का आम तौर पर नज़र आना यह सब भी बुज़दिली की एक किस्म है इस्लामी हुक्मरानों के अंदर ताकत नहीं कि इन चीजों पर पाबंदी आयद कर सकें, नाम तो इस्लामी रियासत है लेकिन मुसलमानों पर जुल्म होते देख यह रियासतें भी बुज़दिली दिखाना शुरू कर देती हैं।
अगर हम यह कहें कि छोटों से लेकर बड़ों तक सब बुज़दिली की लपेट में हैं तो कोई गलत बात नहीं क्योंकि जिन मुसलमानों के पास हतियार, इक़्तेदार और ताकत नहीं वह तो जाहिर है लेकिन जिनके पास यह सब हैं वह भी ज़हनी तौर पर ग़ुलाम होने की वजह से बुज़दिल हैं । सबको मौत का डर है हालांकि मर जाने और मार देने दोनों में मुसलमानों का फायदा है यह बात समझ में आ जाए तो बुज़दिली दूर हो सकती हैं।

हुज़ूर अकरम ﷺ की तलवार पर लिखा हुआ था-

बुज़दिली बायसे शर्म है ,इज़्ज़त आगे बढ़ने और दुश्मन पर हमला करने में है, बंदा बुज़दिली करके तकदीर से कभी नहीं बच सकता।
(मौत डरपोक को भी आ दबोचती है और बहादुर भी चला जाता है, क्या ही अच्छा हो के बहादुरों की तरह जान कुर्बान की जाए)

अल्लामा लुक़मान शाहिद हफ़ीज़ुल्लाह लिखते हैं कि अभी अपने बेटे को मदारिज अल नबुव्वत से यह शेयर पढ़ाया है -
ये रसूलल्लाह ﷺ की तलवार मुबारक पर लिखा हुआ था
उसे तल्क़ीन की है कि बेटा कभी डरपोक नहीं बनना इज़्ज़त बहादुरी में है बुज़दिली में नहीं मुसलमान जुर्रत मन्द होता है बुज़दिल नहीं !!
अल्लाह पाक हमें और हमारी नस्लों को जुर्रत अता फरमाए हम अल्लाह के सिवा किसी से न डरें

मुसलमान होकर इल्म से दूरी ?

अज़: अब्दे मुस्तफा अल्लामा मौलाना जनाब मोहम्मद साबिर इस्माईली कादरी रज़वी साहब किबला

जिस तरह दूसरी बातों में दीन ए इस्लाम को एक मुनफ़रिद मुकाम हासिल है उसी तरह इल्म हासिल करने के बाब में भी इस्लाम का नाम सबसे पहले आता है इस्लाम की आमद से पहले इल्म हासिल करने पर कोई खास तवज्जो नहीं दी जाती थी दुनिया में इस्लाम का सूरज चमकने से पहले इल्म के महल में तारीकी छाई हुई थी इल्म हासिल करने को एक खास तबके का काम समझा जाता था मुख्तलिफ मजाहिब के उल्मा ही इल्म हासिल करने के पाबंद थे और जिहालत भरी पाबंदियां उन पर आएद कर दी जाती थीं।

एक मिसाल:

हिंदुओं को देखें तो उनमे शूद्र को वेद पढ़ने की इजाजत नहीं थी और अगर कोई शूद्र वेद पड़ता पकड़ा जाता तो उसे सजा दी जाती थी जैसा कि अबू रेहान अलबेरुनी ने तहकीक मअल हिंद में लिखा है

अरब में जब इस्लाम आया तो सिर्फ 17-18 लोग लिखना जानते थे जिनमें हजरत उमर फारुक भी शामिल हैं इन बातों को बयान करने का मकसद यह बताना है कि इल्म को कोई खास अहमियत हासिल नहीं थी और बहुत कम लोग ऐसे थे जो राहे इल्म के मुसाफिर थे।

इस्लाम में मसावात:

इस्लाम ने छोटे-बड़े, काले-गोरे और कबायली शराफत के झगड़े को इस तरह खत्म किया कि किसी को किसी पर कोई फ़ज़ीलत ना दी बल्कि सबको आदम अलैहिस्सलाम की औलाद होने का याद दिलाया अगर फ़ज़ीलत दी तो इल्म और तक्वे की बुनियाद पर। अब उसका नतीजा यह निकला कि एक गुलाम काबे की छत पर चढ़कर अजान देने लगा जिसे कुफ़्फार ए मक्का अपनी मजलिसों में बैठाना बायस ए शर्म समझते थे यह गुलाम जिसके साथ जानवरों जैसा सुलूक किया जाता था उसे ज़्यादा इल्म होने की वजह से उसका मालिक उसे अपने आगे इमाम बनाने लगा और खुद उसका मुक्तदी बन गया दुनिया ने यह मंज़र देखा कि जो गुलाम थे वह बादशाहों के इमाम बन गए और किसी को माल या नस्ब की वजह से फ़ज़ीलत ना दी गई।

मुसलमान होकर इल्म से दूरी:

मुसलमान होकर कोई इल्म से दूर हो तो इसका यही मतलब है कि उसने इस्लाम को जाना ही नहीं क्योंकि यह वह दीन है जिसने इल्म की वजह से एक जवान को बूढ़े पर फ़ज़ीलत दी है, अहले इल्म को आलम ए इस्लाम का मरकज बनाया है। अल्लाह ताअला ने इल्म की

तरग़ीब पर कई आएतें नाज़िल फरमाई हैं और जहल की मज़म्मत सरीह अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाई है। ये इस्लाम की आमद की बरकत थी कि दुनिया ने इल्म की अहमियत को जाना और आज वह इल्म का परचम उठाने वाले मशहूर हो गए। उससे पहले वह खुद गुमराही के गढ़े में थे इस्लाम की गोद में पलने वाले उलमा ने दुनिया को वह इल्म सिखाएं जो वह सोच भी नहीं सकते थे । मुसलमानों की इल्म से दूरी ही उन्हें यह भी जानने से रोकती है उनसे पहले वालों ने दुनिया को क्या-क्या कारनामे करके दिखाएं हैं। आज अगरचे दाढ़ी-टोपी देखकर हमें कम इल्म वाला समझा जाता है लेकिन एक वक्त में यह कौम इल्म से पहचानी जाती थी।

दीनी और दुनियावी इल्म:

इल्म को आम लफ्ज़ों में दो हिस्सों में तक्सीम किया जाता है एक दीनी इल्म और दूसरा दुनियावी इल्म दोनों ज़रूरी हैं। इसे यूँ कहना बेहतर होगा कि दीनी उलूम के साथ-साथ दुनियावी उलूम भी ज़रूरी हैं कुछ लोग इसे इस तरह कहते हैं कि दुनियावी उलूम के साथ-साथ दीनी उलूम भी ज़रूरी हैं जो कि दुरुस्त नहीं है। इनमें फर्क यह है कि पहले दीनी उलूम ज़रूरी हैं फिर उसके साथ-साथ दुनियावी उलूम ज़रूरी हैं। दुनियावी उलूम के मुक़द्दम रखने से यह तास्सुर जाता है कि दीनी उलूम बाद में हैं. अगर दीनी उलूम हो और दुनियावी उलूम सबके पास ना हो तो भी काम चल सकता है लेकिन अगर दीनी उलूम की कमी हो तो काम नहीं बनेगा।

किफ़ायत:

दीनी उलूम सब के पास होना ज़रूरी है क्योंकि यही आपको ताकत देता है जिससे आप दुनियावी उलूम को संभाल सकते हैं वरना दुनियावी उलूम आपको तबाही की तरफ भी ले जा सकते हैं । जब सबके पास दीनी उलूम हो तो फिर दुनियावी उलूम के लिए हर शख्स को तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं बल्कि बाज़ का महारत हासिल कर लेना सब को किफायत करेगा। मसलन ग़ज़वात उन नबी का इल्म होना हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है लेकिन लड़ने के लिए हथियार की जरूरत होगी और मौजूदा दौर में तकनीकी तरक़्क़ी पुरे उरूज पर है लिहाजा अब सनअत में महारत की भी जरूरत है वरना मुकाबले में हथियार कहां से आ सकते हैं? और इसके लिए एक जमाअत को इंजीनियर बनना होगा और वह सबको किफायत करेगा। एक शख़्स डॉक्टर बन जाए तो पूरे मोहल्ले को काफी हो सकता है। और हर शख्स को अपने इलाज के लिए डॉक्टर बनने की जरूरत नहीं। लेकिन दीनी उलूम हर शख्स पर हासिल करना फर्ज है ताकि अपने अक़ाइद और इबादात को दुरुस्त कर सके।

मुसलमानों को इल्म की तरफ लाया जाए:

मुसलमानों को इल्म की तरफ ले जाने के लिए उन्हें एक झंडे तले लाना ज़रूरी है अगर हर

शख्स अपनी अपनी मर्जी के मुताबिक जो चाहेगा वह करेगा तो ताकत कई हिस्सों में बट जाएगी होना यह चाहिए कि किसी इलाके के तलवा को बाकायदा एक सिस्टम के हिसाब से राहे इल्म का मुसाफिर बनाया जाए अगर दो-तीन लोग इंजीनियर बन रहे हैं तो सबको इसी लाइन में ले जाकर खड़ा कर देना पैसों की बर्बादी के साथ-साथ वक्त को ज़ाया करना है और अपनी नस्लों के मुस्तकबिल के साथ खेलना है। कुछ लोग डॉक्टर बने, कुछ इंजीनियर बनें,कुछ मकान तामीर करने के मुख्तलिफ उलूम पर महारत हासिल करें, कुछ अंग्रेजी सीखें, कुछ तकनीकी कामों में माहिर बने, फिर एक सिस्टम के तहत अपने ही इलाके में एक दूसरे के मुआविन बने इससे मुसलमानों को इल्म के करीब भी लाया जा सकता है और उलूम को एक जगह जमा करके उससे फायदा भी उठाया जा सकता है।

हमारे उलूम की खेती:

हम अगर मैदान ए इल्म में मुनज़्ज़म होकर सलीके से काम शुरु कर दें तो हमारे हासिल किए हुए उलूम की खेती से हमारी नस्ले सैराब होंगी और उन्हें किसी गैर की जूतियां सीधी करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। मुसलमानों की एक बड़ी तादाद अंग्रेजी, कंप्यूटर और मुख्तलिफ उलूम को सीखने के लिए काफिरों की मोहताज है तो क्या ही अच्छा होता कि यह सब हमारे पास होता जिन मुसलमानों के बच्चे काफिरों के स्कूल या कॉलेज में ना पढ़कर मुसलमानों के स्कूल में पढ़ते हैं वह भी कम अज़ कम काफिरों के सिस्टम के गुलाम हैं क्योंकि अगरचे स्कूल मुसलमानों का है लेकिन उसमें निसाब ए तालीम वही है जो कुफ़्फार का है फिर इसमें और उसमें बहुत ज़्यादा फर्क बाकी नहीं रहा।

उलमा आगे आयें:

उलमा की बात आवाम सुनती है। उलमा को चाहिए आगे आयें । दीनी मदारिस के साथ स्कूल चलाएं। और हर सहूलियत फराहम करें जो स्कूल में होती हैं। फ़ीस थोड़ी कम रखें लेकिन सहूलियत ज्यादा दें। बगैर चंदे के भी काम हो सकता है बस सिस्टम ज़रूरी है । इसके अलावा कॉलेज और यूनिवर्सिटी भी ज़रूरी हैं। जहां असरी उलूम पर दस्तरस हासिल हो सके । यह सब मुमकिन है बस मेहनत की जरूरत है। अल्लाह तआला इसकी तौफीक अता फरमाए।

मुस्लिम शहज़ादी और कॉलेज

अज़: मुस्लेह क़ौम ओ मिल्लत जनाब फरदीन अहमद खान रज़वी साहब क़िब्ला

तुम मगरिब की कोई लैला नहीं मशरिक की है दुख्तर

उम्मीदों का एक जहां दिल में समेट कर एक बाप अपनी नन्ही सी कली को तालीम हासिल करने के लिए स्कूल या कॉलेज में भेजता है और यह गुमान करता है कि उसकी शहज़ादी उसका नाम रोशन करेगी। उसके ख्वाबों की हसीन ताबीर बनेगी । मगर हजार अफसोस का मकाम है कि आजकल वाक़्या उसके वर ख़िलाफ़ होता है। वह ख्वाबों की ताबीर नहीं बल्कि जिंदगी भर की आर और बदनामी बन जाती है । जिस शहजादी को उसकी मां एक शहजादे की कहानियां सुनाकर सुलाती थी वहीं आज उस इस कदर बेबाक हो गई के खुद ही वक्त गुजारने का एक जरिया तलाश करने निकल पड़ी। मां-बाप की ख्वाहिश तो यह थी कि हमारी यह नाजुक सी कली किसी सफेद पोश शहजादे के साथ रहेगी मगर यह देखकर आंखें मातम करती हैं कि इस शहज़ादी का दिल तो एक चूड़ें चमार से ज्यादा ज़लील शख़्स पर आया हुआ है। अपने खानदान की इज़्ज़त का जनाजा सर पर उठाए कॉलेज की दरो दीवार के अंदर अपने नाम-नेहाद साथी (Boyfriend)बॉयफ्रेंड के साथ घूम रही है जिससे उम्मीद तो यह थी कि वह हमेशा अपने शौहर की खिदमत और उससे मोहब्बत के वादे करेगी वो आज किसी गैर के साथ जीने मरने की कसमें खा रही है। हलक में पानी और कलम की रोशनाई सूखने लगती यह सोचकर के मां बाप पर क्या बीतती होगी यह जानकर कि जिसका नाम सुनकर वह फ़ख्र से सर ऊँचा कर लेते थे उसी ने आज उनका नाम मिट्टी में मिला कर खानदान की इज़्ज़त को जमींदोज कर दिया है।

इसी पर बस नहीं है बल्कि अगर किसी शरीफ लड़की को परदा ,हया और इन तालुक़्क़ात की मज़म्मत करते हुए पाया तो उसे (Backward)बैकवर्ड और अनपढ़ गंवार कहकर छिड़क दिया । और अल्लाह की पनाह जब उसी शहजादी के दिल में शैतान जिंसी खयालात की आमद ओ रफत को तेज़ करता है तो यही लड़की जो अपने साथ सिर्फ अपनी नहीं बल्कि एक खानदान ,एक कौम को साथ लेकर चलती थी वही एक शब बाशी (one night stand) जैसी गलीज़ तरीन हरकत तक को अंजाम दे देती है।

यह सब कुछ तो फिर भी प्यार के नाम पर किया जा रहा है और करने वाले कम से कम इसे किसी हद तक गलत जानते हैं । मगर अल्लाह की पनाह एक खतरा ऐसा भी है जो बहुत आम है और उसे लोग बुरा भी नहीं समझते । इस वबा का नाम (Best Freind)बेस्ट फ्रेंड यानी सबसे अच्छा दोस्त है और उसका मतलब आज के वक्त में यह हो गया है कि किसी अजनबी मर्द के साथ जो चाहो करो. उसे छुओ, हाथ पकड़ो, उसकी पीठ थपथपाओ, रात रात

भर उससे बातें करो, उसे घर पर बुलाओ, मां-बाप के सामने गुफ्तगू के गुंचे चटकाओ, उसके साथ फिल्में देखने जाओ, उससे हम रिकाबी. यहां तक कि एक ही बिस्तर में सो जाओ। मगर जब कोई खुदा का ख़ौफ रखने वाला कहे कि यह कैसी अय्याशी है यह? तो उसे बड़े तपाक से जवाब दो कि हम सिर्फ दोस्त हैं ।(We Are Just Friends)

अरे अल्लाह की बंदी क्या इस जुमले ने तुम्हें दुनिया भर के गुनाह करने का लाइसेंस(Licence) दे दिया ? क्या अल्लाह के हुज़ूर यह जवाब देने की हिम्मत है?
यह वही शैतानी जुमला है जिसने कई लड़कियों की इज़्ज़त बर्बाद करदी। वह भोली भाली शहजादी तो यह समझ रही थी कि यह शख़्स सिर्फ दोस्ती चाहता है। मगर उस ज़ालिम की बुरी नज़र तो उसकी इस्मत पर थी। और जब उसने अपना मकसद पूरा कर लिया तो वह यह कह कर निकल गया के (we are just friends) मगर इस शहजादी की सारी पाक-दामनी खत्म हो गई।

और दिल पर पत्थर रख के अर्ज करना पड़ रहा है कि इतनी अय्याशी और सर कशी के बाद भी जब नफ़्स की ख्वाहिश पूरी होती नजर नहीं आती तो फिर यही शहजादी गुनाहों के सबसे ग़लीज रास्तों को इख़्तयार करती है ।मां-बाप से झूठ बोलकर अजनबी लड़कों के साथ (Dates) मुलाकातों पर जाती है और खुले तौर से अपने आप को गैर की तहवील में देकर सिर्फ एक खिलौना बन कर रह जाती है। और जब यही कसमे वादे खाने वाला शख़्स उसका इस्तेमाल करके चला जाता है तो बदहवासी के आलम में यही शहजादी मौत को ही अपने दर्द का मदावा समझ कर खुदकुशी कर लेती है। यह कोई कहानियां या अफसानो में से मुन्तख़ब बातें नहीं है यह वह हकीकत है जिससे अखबार की औराक़ और चश्मदीदों की आंखें सियाह हैं ।अजनबी मर्दों के साथ मोटरसाइकिल पर घूमना, बेहतरीन रेस्टोरेंट में जाकर शम्मा मोमबत्ती में खाना तनावुल करना, जिसे (Candle Light Dinner) कहा जाता है उनके साथ (Home Stay) करना, यह सब कुछ आज आम होता जा रहा है मगर याद रखना कि यह तमाम काम लिखे जा रहे हैं। और जितना भी चाहो गुनाह कर लो मगर यह कभी मत सोचना कि उसकी सजा नहीं मिलेगी, बेशक मिलेगी दुनिया में भी और आखिरत में भी।

और जहां इन तमाम बातों की जिम्मेदार ऐसी शहज़ादियां हैं वहीं उनके मां-बाप भी बिल्कुल इल्ज़ाम से बरी नहीं है। क्यों उन्होंने अपनी बेटी को पर्दे का एहकाम नहीं सिखाये?, क्यों उसे अजनबी मर्दों से बात करने से नहीं रोका?, अगर पहले ही से अपनी फूल सी बच्ची को फिल्में, ड्रामें दिखाने के बजाए सय्यदा फातिमा रदिअल्लाहू अन्हा की सीरत पढ़ाई होती तो आज इस तरह उनकी लख्ते जिगर दर्दे सर ना बनती । जिन लोगों की बेटियां कॉलेजेस में पढ़ रही हैं वह भी उसे नोट करें और बर वक्त सही इकदामात लें वरना नतीजे अच्छे नहीं होंगे अल्लाह हमारी हिफाजत करें और इस के साथ शहज़ादियों तुम भी सुनो!
ऐ मिल्लत ए इस्लामिया के मेअमारो आज यह भाई तुम से इल्तिजा कर रहा है खुदा के वास्ते

यह जुल्म ना करो अपनी इज़्ज़त अपने हाथों नीलाम ना करो। यह दुनिया तो ख़त्म हो जाएगी यह रिश्ते तो खत्म हो जाएंगे, यह जवानी ,यह हुस्न सब फना हो जाएगा, मगर गुनाह से अगर तोबा ना की तो यह गुनाह तुम्हारे साथ कयामत तक रहेंगे और जब रब्बुल आलमीन तुमसे सवाल पूछेगा तो क्या जवाब दोगी ? क्या उज़र पेश करोगी? आज भी वक्त है तोबा का दरवाजा तो बंद नहीं हुआ है, आओ अपने रब की तरफ पलट आओ वह बड़ा रहीम है बड़ा करीम है। उसने बड़े-बड़े गुनाहगारों को बख़्श दिया तुम सच्चे दिल से तोबा करो वह तुम्हें भी बख़्श देगा । बस तुम्हें इतना करना है कि मुसल्ला बिछाकर नमाज अदा करो और फिर गिड़गिड़ा कर प्यारे मुस्तफा का वास्ता देकर रब के हुज़ूर तोबा कर लो। अपनी ज़िन्दगी बर्बाद होने से बचा लो अपनी इस्मतें महफ़ूज़ कर लो

अल्लाह हम सब की मांओं-बहनों , बिलखुसूस हमारी स्कूल कॉलेज में पढ़ने वाली बहनों की इज़्ज़तों की हिफाजत फरमाए । और हम सबको नेक रास्ते पर चलने की तौफीक अता फरमाए । आमीन

इंटरनेट का गलत इस्तेमाल

अज़: मुस्लेह क़ौम ओ मिल्लत जनाब फरदीन अहमद खान रज़वी साहब क़िब्ला

दिन लहव में खोना तुझे, शब सुबह तक सोना तुझे
शर्म ए नबी ख़ौफ ए खुदा, यह भी नहीं वह भी नहीं

जदीद ज़राए इब्लाग़ की फरोग से तमाम आलम को नई नई टेक्नोलॉजी बाआसानी दस्तेयाब हुई। इसके ज़रिए से हम दूर दराज के इलाकों में बैठे लोगों से भी आसानी से बात कर सकते हैं और इसी के अगले दर्जे का नाम इंटरनेट है। जहां तरह तरह की खबरें, मज़ामीन, वीडियो, ऑडियो, तस्वीर, वगैरह चीजें मौजूद हैं। इसके इस्तेमाल से हम घर बैठे दुनिया में कहीं भी किसी भी होने वाली बात की मालूमात चंद लम्हों में हासिल कर सकते हैं और इसके बहुत सारे फायदे हैं जैसे के पैगामात का पहुंचना आसान और सस्ता हो गया, तबलीग़ वगैरा के कामों में बेपनाह तरक्की हुई है। यह सब इंटरनेट की बदौलत मुमकिन हुआ है। मगर यह बात भी काबिले ज़िक्र है कि जहां किसी चीज के फायदे हैं वही नुकसान भी हैं। और इंटरनेट के नुकसानात की फ़हरिस्त काफ़ी तवील है। यहां हम सिर्फ आवाम के फ़हम के मुताबिक और अपने मुसलमान भाइयों की इसलाह की खातिर वो बातें ज़िक्र करते हैं जिससे इंटरनेट के इस्तेमाल की तस्वीर अच्छी तरह से उजाले में आ जाए।

इंटरनेट के गलत इस्तेमाल के ज़िमन में यह चीज़ें है सरे फेहरिस्त हैं:
1) पहचान की चोरी 2) धोकेबाज़ी 3)उरियानियत 4)गैरकानूनी कारोबार
5)जाली अशिया की फरोख्त 6)सिर्फ जिंसी लज़्ज़त हासिल करने के लिए अजनबी औरतों, मर्दों से गुफ्तगू 7)बद निगाही 8)मौसिकी 9)हैकिंग
10) ज़ाती मालूमात की चोरी।
यकीनन इससे भी कहीं ज्यादा नुकसान आप अहले नजर को मालूम होंगे मगर मैं इतने पर ही एकतफा कर रहा हूं। अब थोड़ी थोड़ी इन सब की वजहत मुलाहिजा हो।

पहचान की चोरी(Identity Theft):
हर इंसान की अपनी अलग पहचान है। और किसी को यह हक नहीं पहुंचता कि वह दूसरे की पहचान को चोरी करे और उसके जरिए से उसे फंसाने की कोशिश करे। आमतौर पर हम सब अपनी तस्वीरें अपने बारे में हस्सास मालूमात इंटरनेट के जरिए सोशल मीडिया साइट्स पर डालते रहते हैं। मगर कुछ लोग इस बात का नाजायज फायदा उठाते हुए इन बातों को चोरी कर लेते हैं और हमारा नाम इस्तेमाल करके गैर कानूनी कामों को अंजाम देते हैं। और इसका इल्जाम हम पर आता है। क्योंकि उसने जानकारी हमारी इस्तमाल की होती है।

इसलिए हर शख्स को अपनी प्राइवेसी का ख्याल रखना चाहिए और हस्सास मालूमात इंटरनेट पर डालने से बचना चाहिए।

2) धोखेबाजी (Fraud):
यह भी आज की इस पुर फ़ितन दुनिया में आम होता जा रहा है कभी हमारे पास एक ईमेल या मैसेज आता है कि आपका अकाउंट हैक हो गया है अभी यहां क्लिक करें और हम क्योंकि इन फरेब कारियों से ना वाकिफ होते हैं इसलिए वहां जाकर अपनी बैंक की मालूमात दे देते हैं और हमारा सारा पैसा चोरी हो जाता है। इसी तरह जाली वेबसाइट बनाकर लोगों को ठगा जाता है और उनका माल चुराया जाता है। हमें चाहिए कि ऐसे फरेबी मैसेजेस से होशियार रहें और अपने आपको इनका शिकार ना बनने दें।

3)उरियानियत(Pornography):
कलम व ज़ुबान की शराफत तो हरगिज़ इसकी इजाजत नहीं देती के ऐसे ग़लीज मौज़ू पर कुछ भी कहा जाए। मगर नस्ल की तबाही दामन गीर है। इंटरनेट के गलत इस्तेमाल में यह सबसे ज्यादा खतरनाक है इसमें बंदा दूसरे लोगों को जिंसी हरकत और ज़िना करते हुए देखता है और इससे लज़्ज़त हासिल करता है ।अफसोस की बात है कि आज मुस्लिम नौजवानों की एक कसीर तादाद इस बुरे काम में मुब्तिला है। ज़िना जैसी गंदी और घटिया हरकत को देखकर अपनी फिक्र ए सलीम को तबाह कर लेता है। और जल्द ही इसका आदी हो जाता है। इसकी सबसे बड़ी तबाहकारी यह है कि फिर बंदा मुआशरे से अलग होकर चिड़चिड़ा और बदमिज़ाज हो जाता है। और आगे चलकर जब उसकी शादी होती है तो उसे कोई लज़्ज़त नहीं मिलती क्योंकि अपना कीमती शरमाया तो पहले ही गंवा चुका है। अब उसकी जिंदगी बदतर हो जाती है और अक्सर ऐसे लोग औलाद होने से भी माज़ूर हो जाते हैं। अल्लाह हमारी नई नस्ल को इससे महफ़ूज़ रखे। आमीन

4) गैरकानूनी कारोबार (Illegal Business):
इंटरनेट पर बातचीत आसानी के साथ हो जाती है। इसीलिए इस पर खरीद-फरोख्त भी शुरू हुई और इन्हें काफी तरक्की मिली ।यहां तक कि दुनिया का सबसे मालदार आदमी जैफ बेज़ोज़ (Jeff Bezoz) का कारोबार भी पूरी तरह इंटरनेट पर फैला हुआ है। और उसकी कंपनी ऐमेज़ॉन(Amazon) दुनिया की सबसे मालदार कंपनी है। मगर जहां इसका अच्छा इस्तेमाल हो रहा है वहीं कई लोग इसके जरिए से नाजाइज़ हथियारों, चरस, गांजा अफीम, कच्ची शराब, नशा, और दवाइयों को भी जमकर फरोख्त कर रहे हैं। और इंसानों तक की तस्करी हो रही है। हमें चाहिए कि ऐसे कारोबार से बचें और सिर्फ हलाल रिज़्क कमाने में ही लगे रहें।

5) जाली अशिया की फरोख्त(Counterfeiting):

यह वह काम है जिसके जरिए असल चीजों की एक नकली मिसाल तैयार की जाती है और उसे असली के दाम में बेचा जाता है। मसलन एक मोबाइल किसी कंपनी ने लांच किया फिर किसी दूसरी कंपनी ने उसकी मिसाल तैयार कर ली और बाजार में असल की कीमत पर फरोख्त शुरू कर दी। इंटरनेट के जरिए इस कारोबार ने भी बहुत उरूज हासिल किया हुआ है। क्योंकि इंटरनेट पर इस कारोबार को पकड़ पाना मुश्किल है इसलिए इससे जुड़े लोग बहुत बेबाकी से अपने काम को चला रहे हैं। एक समझदार शख्स होने की निशानी यह है कि हम असली और नकली में फर्क समझें और अपने आप को इस ठगी से बचाएं।

6) सिर्फ जिंसी लज़्ज़त हासिल करने के लिए अजनबी औरतों, मर्दों से गुफ्तगू (Sex Talk):

इंटरनेट के बदतरीन गलत इस्तेमालात में से एक यह भी है जिसमें मर्द, औरत आपस में मिलकर इंटरनेट के जरिए एक-दूसरे से गंदी बातें करते हैं। वह भी सिर्फ चंद लम्हों की लज़्ज़त के लिए। इस काम के लिए कारोबार करने वाले गरीब मुल्कों से औरतें लेकर आते हैं उन्हें काम दिलाने के नाम पर और यहां उन्हें गंदे काम में धकेल देते हैं। इस्लाम ने अजनबी औरतों से बात करने से मना किया है। लिहाजा हर शख्स को चाहिए कि इस बुरे काम से महफूज़ रहें और जो इसमें मुब्तला हैं वह फौरन तौबा करें।

7) बदनिगाही (Unlawful Gaze):

खूने जिगर को स्याही बनाकर अर्ज़ कर रहा हूं कि आज के दौर में जहां उरियानियत और फ़हाशी आम है वहीं पर टिक टॉक(Tiktok) जैसी मोबाइल एप्लीकेशन के आने से बदनिगाही का एक नया महाज़ खुल गया है। इस पर कुछ फ़हश औरतें और मर्द मौसिकी(Music) की ताल पर रक्स करते हैं। और यह इतना गंदा है कि लोगों ने उरियानियत वाली वीडियो देखना छोड़ दी है क्योंकि नफ़्स को उभारने वाला सारा मवाद तो इस जैसी एप्लीकेशन पर भी मौजूद है। आज बहुत अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि 70% मुसलमान इसमें मुब्तिला हैं। और इसके जरिए से सस्ती शोहरत कमाना चाहते हैं। अल्लाह हमारे हाल पर रहम फरमाए इन्हें बिल्कुल भी शऊर नहीं कि यह किस तरह के ज़िना में मुब्तला हैं।

8) मौसिकी (Music):

इंटरनेट के वुजूद में आने के बाद सबसे पहली चीज जो इस पर तेजी के साथ आम हुई वह है मौसिकी । मौसिकी की इंडस्ट्री 1100 लाख रुपए कमाती है और पूरी दुनिया में इसके गिरवीदा लोग मौजूद हैं। इसी इंटरनेट के ज़ोर पकड़ने से हजारों लोगों की जिंदगी में मौसिकी ने जगह बनाई और आज वह इसके आदी बन चुके हैं। एक सर्वे के मुताबिक मौसिकी से

इंसान के दिमाग में ऐसे असरात मुरत्तब होते हैं जिससे वह सुन्न हो जाता है। और उसमें नई चीजों को समझने की सलाहियत कम हो जाती है। इसको यू देखें के गाना सुनने वाले शख्स के दिमाग में मुसलसल वही चलता रहता है। जिससे नई चीजों पर ध्यान देना मुश्किल हो जाता है। फ़ुकहाए इस्लाम ने यह तसरीह कर दी है कि मौसिकी इस्लाम में हराम है(जैसे के दुर्रे मुख़्तार में है) और खुद सुफ़िया किराम ने भी इससे मना फ़रमाया है और यह बात भी मुशाहिदे से साबित है कि मौसिकी बनाने वाले लोग बहुत मेहनत से ऐसा मवाद तैयार करते हैं कि इंसान इसमें फंस जाए और उसे एक तरह से नशा मिले लेकिन एक समझदार मुसलमान को चाहिए के इन तमाम ख़ुराफ़ात से दूर रहें और अपने दीन की हिफाज़त करें।

9) हैकिंग (Hacking):
हैकिंग एक ऐसा तरीका है जिससे कि कोई शख्स बगैर इजाज़त के किसी भी इदारे की वेबसाइट में दाखिल हो सकता है और वहां से नाजुक मालूमात को चुरा या बदल या तबाह कर सकता है। इंटरनेट के बुरे इस्तेमाल में से एक यह भी है। जिससे लोगों को और खासकर इदारों को बहुत नुकसान होता है। मसलन किसी ने आपकी आईडी को हैक कर लिया अब आपके नाम से जो चाहे इंटरनेट पर डाले उसे कोई रोकने वाला नहीं और नाम आपका बदनाम होगा। इसी तरह इदारों की वेबसाइट हैक करके लोग वहां से उनकी बैंक की जानकारी वगैरह हासिल करते हैं और उनके पैसे चुरा लेते हैं। इससे भी बचने की जरूरत है। और इसकी सबसे अच्छी तदबीर यह है कि हम अपनी आईडी पर मजबूत और पेचीदा पासवर्ड लगाएं और हस्सास मालूमात इंटरनेट पर ना डालें।

10) ज़ाती मालूमात की चोरी (Privacy Theft):
यानी किसी शख़्स के ज़ाती बातें जो सिर्फ उससे मुताल्लिक़ हैं मसलन उसके घर की मस्तूरात की तस्वीर या शौहर बीवी की तस्वीर, वीडियो, वगैरा। उनकी चोरी करना यह बहुत ही संगीन जुर्म है जिसके बिना पर लोगों की जिंदगियां तबाह हो चुकी हैं। हर इंसान अपनी इज़्ज़त ए नफ़्स से मुहब्बत करता है लिहाजा वो यह कभी नहीं चाहेगा कि उसकी घर की बातें लोगों में फैला दी जाएं इसलिए दुनिया में ज़ातियात को लेकर बहुत कवानीन बनाए गए हैं। जिन्हें Privacy Laws कहते हैं। और वहीं हमारा मज़हब भी इस चीज से हमें मना करता है ।इस्लाम में बे इजाज़त जब दूसरे के घर में झांकने की इजाजत नहीं तो किसी की मालूमात में झांकने और उन्हें चुराने की इजाजत कैसे हो सकती है? लिहाज़ा हमें चाहिए इस काम से भी बचें और ऐसे लोगों से होशियार रहें।

इसी पर अपनी गुफ्तगू को खत्म करना चाहूंगा अल्लाह हम सबकी इसलाह फ़रमाए।

ज़िना की नहूसत

अज़: मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

इस्लाम वह मजहब ए मोहज़्ज़ब है जो इंसान को जीने का सही तरीका फ़राहम करता है जो एक अच्छी और नेक मुआशरे की तशकील की तालीम देता है। क्योंकि सिर्फ इस्लाम ही वह मजहब है जो इंसान और जानवर में तमीज़ को वाज़ह करता है। दुनिया के बातिल निजाम इंसान को जानवर से भी बदतर बना देना चाहते हैं क्योंकि उनके पास तहज़ीब नहीं। उनके निज़ाम का यह हाल है कि मां बेटे और बाप बेटी में तमीज़ खत्म हो चुका है। बदकारी का यह हाल है कि जानवर भी देखकर मातम करें। वह लोग इंसानी हदों को पार करके जानवरों की हदों को भी पामाल कर चुके हैं। लेकिन इन बातिल निज़ामों का रोना रोने से क्या होगा जबकि हमारे आंगन में ही बदकारी के जरासीम पनप रहे हों।

हमारे पास निज़ाम ए हयात भी है फिर भी बदतर से बदतर हालात हैं अगर मगरिबी तहज़ीब के वह लोग जानवर से बदतर हो चुके हैं तो हम भी कुछ कम नहीं हैं। हमारी आंखों से भी हमारी मां, बहन. बेटियां महफूस नहीं है। हम भी सरेराह अपनी मुस्लिम ख्वातीन को शहवानी निगाहों से घूरते नजर आते हैं। अगर हमको उन मुस्लिम बेटियों का ख्याल होता जो फलस्तीन, बर्मा, इराक, कश्मीर, वगैरह में ज़्यादतियों का शिकार होती हैं। जिनको आए दिन कोई मूज़ी कुत्ता अपना शिकार बना लेता है तो कभी भी हम अपनी आंखों को बदकारी की तरफ माइल नहीं करते। यह तो मैंने सिर्फ आंखों का ज़िक्र किया, आंखों के साथ मुंह, हाथ, पैर, कान सब ज़िना करते हैं। लेकिन आंखें इन सब का सर चश्मा है। अगर हम आंखों की हिफ़ाज़त कर लें तो काफी हद तक ज़िना से बच सकते हैं।

अल्लाह ताअला ने इरशाद फरमाया:
और बदकारी के पास ना जाओ वह बे हयाई है और बहुत ही बुरी राह– (सूरेह बनी इसराईल)

यहां पर अल्लाह तबारक व तआला ने बदकारी यानी ज़िना के करीब जाने से मना किया इसका मतलब साफ है कि सिर्फ ज़िना से बचना ही ज़रूरी नहीं बल्कि जो ज़िना के असबाब व ज़रिये हैं उनसे बचना भी इंतहाई ज़रूरी है।

ज़िना कत्ल से भी बदतर गुनाह:

अहमद यार ख़ान नईमी रहमतुल्लाह अलेह फ़रमाते हैं के ज़िना क़तल से भी बद्तर गुनाह है। क्योंकि क़त्ल में एक जुर्म है और ज़ानी (यानी ज़िना करने वाला) एक वक़्त में तीन जुर्म करता है गुनाह कबीरा, बे-हयाई फैलाना, नस्ल ए इंसानी को ख़राब करना। नेज़ क़त्ल सिर्फ़ हाथ से होता है ज़िना पूरे जिस्म से, इसलिए क़त्ल की सज़ा क़त्ल या माफ़ी है। लेकिन ज़िना की सज़ा सारे जिस्म को पत्थर मारना है। इस की माफ़ी कोई नहीं दे सकता।

ज़िना के तआल्लुक से अहादीस पाक:

कोइ शख़्स ये सोच सकता है कि ज़िना सिर्फ़ औरत, आदमी के नाजायज़ तआल्लुकात कायम करने का नाम है, तो उसकी अक़्ल की इसलाह के लिए हुज़ूर ﷺ की ये हदीस पाक काफ़ी है।

आप ﷺ ने फ़रमाया:

आँख का ज़िना नज़र ए बद है, ज़बान का ज़िना गुफ़्तगू है, दिल तमन्ना और ख़्वाहिश करता है। शर्मगाह उस ख़्वाहिश को सच्चा झूठा करती है। (बुख़ारी: 6243)

यानी शहवत से ग़ैर औरतों को देखना ज़िना है और जुन्बी औरतों के हुस्नों जमाल की तारीफ़ ज़ुबान का ज़िना है उसे शौक से सुनना कान का ज़िना है गरज़ के ज़ानी जिस्म के हर हिस्से से ज़िना करता है इस लिए उसकी सज़ा पत्थर मारना है।

इमाम इब्ने जौज़ी अपनी किताब "ज़म उल हवा" में लिखते हैं कि नबी ﷺ ने फरमाया:

के शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के नजदीक यह है कि आदमी अपना नुत्फा ऐसे रहम में रखे जो उसके लिए हलाल नहीं है।

मजमअ अज़ ज़वाइद में है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया:

ज़ानी इस हाल में लाए जाएंगे के उनके चेहरे आग से भड़क रहे होंगे।

मुसनद ए बज़्ज़ार में है

ज़ानियों की शर्मगाहों की बदबू अहले नार को तकलीफ देगी।

इमाम ग़ज़ाली ने फरमाया ज़िना में 6 मुसीबतें हैं:

1) दुनिया में रिज़्क कम हो जाता है।
2) जिंदगी मुख्तसर हो जाती है।
3) और चेहरा मस्ख़ हो जाता है।
4) आख़िरत में खुदा की नाराजगी
5) सख्त पुर्सिश (पूछताछ)
6)जहन्नुम में दाखिल होता है। (मुकाशेफातुल क़ुलूब)

ज़िना की नहूसत और तबाह कारियाँ जान लेने के बाद भी अगर कोई इंसान इस बुरे काम से अपने आप को नहीं बचाता तो वह अपनी अक्ल का दुश्मन है। वह अपनी आख़िरत बरबाद कर ही रहा है साथ साथ जिस्मानी नुकसानात कितने हैं? इसकी फ़हरिस्त बहुत तवील है बस इतना समझ लीजिए ज़ानी इंसान की जिंदगी में कोई हुस्न बाकी नहीं रहता है।

ज़िना से कैसे बचें?:

क्योंकि इस्लाम निज़ाम ए हयात है तो ज़िना से बचने का तरीका भी इस्लाम से पूछते हैं ज़िना से बचने का तरीका यह है कि सबसे पहले ज़िना के असबाब को तर्क कर दिया जाए जो चीज हमें ज़िना की तरफ माइल करती है उन चीजों को अपनी जिंदगी से दूर कर दिया जाए जैसे अजनबी औरतों से मिलना मिलाना, उनके साथ तन्हाई में रहना, और बुरी सोहबत इख़्तियार करना, इंटरनेट और मोबाइल के ज़रिये ज़िना के मनाज़िर देखना फ़हाशी से भरे लिटरेचर पढ़ना वगैरह। यह सब ज़िना के असबाब हैं। अगर आप असबाब से दूर नहीं होते हैं तो आप हरगिज़ ज़िना से दूर नहीं हो सकते।
ज़िना से बचने का दूसरा तरीका निकाह है ज़रूरी है कि हमारे लिए जहां तक मुमकिन हो जल्द से जल्द निकाह करें। कुरान पाक में जहां कामयाब लोगों की निशानियां बताई गई हैं उन निशानों में एक निशानी यह भी बताई गई कि वह लोग अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं तो ज़रूरी है कि हम अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें।
हमें चाहिए कि हम नेक और सुआलेह इंसान बनकर जिंदगी गुज़ारें अगर ख्वाहिशात पर काबू नहीं हो रहा हो तो निकाह करें। और ऐसा मुमकिन ना हो तो रोज़ा रखें क्योंकि रोज़ा नफ़सानी ख़्वाहिशात को मारने में काफी कारगर साबित होता है। अल्लाह से दुआ है कि हमें ज़िना की नहूसत से बचाए रखे और हमें हया का पैकर बना दे ।

अंदाज़ ए बयाँ गरचे बहुत शोख़ नहीं है,
शायद के उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात

मुसलमान नौजवान और शराब नोशी

अज़: अल्लामा मौलाना जनाब निहाल अली क़ादरी साहब क़िब्ला

पेशे लफ्ज़:

अल्लाह तआला के ने फरमाया कयामत की निशानियां में से यह है कि जिहालत गालिब हो जाएगी और इल्म कम हो जाएगा। ज़िनाकारी बढ़ जाएगी ।शराब कसरत से पी जाने लगेगी आज सादिक व मसदूक़ नबी की बात सच होती दिख रही है। हमारे मुआशरे में तरह-तरह की बुराइयां रुनुमा हो चुकी हैं। जिन को अंजाम देने में कोई बुराई नहीं समझता। इन्हीं बुराइयों में से एक शराब नोशी की है जिसमें मुसलमान नौजवान समेत बूढ़ों की एक बड़ी जमात मुलव्विस है और शराब की तरह दूसरे कई मशरूबात भी जिनको बड़े शौक व कसरत के साथ इस्तेमाल किया जाता है। लिहाजा हमने चंद सफ़हात पर मुशतमिल एक किताब लिखने का इरादा किया जिसके ज़रिये लोगों को शराब की शरई हुक्म व सज़ा और उसके नुकसानात से आगाह किया जाए इससे बचने की तरग़ीब दिलाई जाए। अल्लाह हमारी कोशिश को कुबूल करे और हम सबको अमल की तौफीक अता फरमाए।

इस्लाम और शराब:

शराब इस्लाम से पहले अरब में पानी की तरह इस्तेमाल की जाती थी। यहां तक के बच्चों को घुट्टी में पिलाई जाती थी। बाकायदा शराब की दावत की जाती थी शराब की मजलिसें मुनअक़िद होती थी। इसलिए इसका एकदम छुड़ा देना नामुमकिन था। इसी वजह से इसकी हुरमत के एहकाम रफ्ता रफ्ता आए। सबसे पहले मक्का शरीफ में यह आयते करीमा नाज़िल हुई-

وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ. الخ

मुसलमान फिर भी आम तौर पर शराब नोशी करते रहे फिर जब हुज़ूर मदीना तशरीफ लाए तो कुछ सहाबा इकराम ने उसके नुकसानात को मद्दे नजर रखते हुए अल्लाह के रसूल की बारगाह में सवाल किया तो ये आयते करीमा नाज़िल हुई:

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ

इस आयत में शराब के नुकसानात से आगाह किया गया । कुछ लोगों ने इस आयत के नुज़ूल के बाद शराब को तर्क कर दिया। लेकिन कुछ लोग फिर भी पीते रहे इसलिए इस आयत में हराम करार नहीं दिया गया था सिर्फ नुकसानात से आगाह किया गया था। फिर कुछ दिनों के बाद हालते नमाज़ में शराब को ममनूअ करार दे दिया गया। और यह आयत करीमा नाज़िल हुई:

لاتقربوا الصلاة وانتم سکاری

अभी भी शराब की तलब लोगों में बाकी थी गाहे-बगाहे लोग इस्तेमाल किया करते थे। एक मर्तबा शराब की वजह से कुछ लोगों में लड़ाई हुई मुकदमा हुज़ूर ﷺ की बारगाह में पेश किया गया तो उस वक्त हज़रत फारूक ए आजम ने अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ की कि शराब के मुताल्लिक़ पूरा बयान नाज़िल फरमा तब ये आयते करीमा नाज़िल हुई

انما الخمر والمیسر

से

فھل انتم منتھون

तक

और शराब को कतई तौर पर कयामत तक के लिए हराम करार दिया दे दिया गया।

मदीने की गलियों में शराब:

रिवायत में आता है जब शराब को हराम किया गया और मदीने में ऐलान कराया गया तो लोग फौरी तौर पर अपने अपने घरों से शराब के मटके निकाल निकाल कर फेंकने लगे। हजरत अनस बिन मालिक रज़ी अल्लाह तआला अन्हु फरमाते हैं इस दिन हमारे घर में मुसलमानों की दावत थी जिसका दौर चल रहा था हमारे घर में बहुत से मटके शराब के रखे हुए थे। अचानक मुनादी की आवाज़ कान में आई मेरे वालिद ने कहा, सुन कर तो आओ मैंने वापस आकर बताया सुनते ही अहले मजलिस की ऐसी हालत हुई कि जिसके हाथ में जाम था उसने वहीं पटक दिया, जो मटके शराब उढेल रहा था उसने वहीं प्याला तोड़ दिया, जिसके मुंह में थी उसने कुल्ली करदी, जो मुंह तक प्याला ले गया था उसने वहां से ही वापस कर लिया, हजरत अनस फरमाते हैं सारे मटके मैंने डंडे से फोड़ दिए। उस दिन मदीने की गलियों में शराब बारिश के पानी की तरह बह रही थी। सूख जाने के बाद भी कई माह तक जमीन से शराब की बू आती रही । इस बात की मिसाल दुनिया में नहीं उसके बाद फिर शराब पीना बिल्कुल बंद हो गया।

मुस्तफा तेरी सौलत पे लाखों सलाम

सबक़:

हमें इससे सबक लेना चाहिए वह कैसे मुसलमान थे जो नशे की हालत में भी अल्लाह तआला और रसूल की इताअत करना नहीं भूले। एलान सुनते ही हाथों से जाम जुदा कर दिया। आज हम हैं कि बे-नशा होकर भी बेहोश नजर आ रहे हैं अल्लाह तआला और रसूल की इताअत को पसे पुश्त डाल रखा है। मुसलमानों होश में आओ अल्लाह तआला और रसूल की इताअत शिआरी में लग जाओ।

शराब के ताल्लुक से अहदीस ए नबी:
इस्लाम में हर शख्स के लिए 5 बुनियादी ज़रूरियात की हिफाजत को लाजमी करार दिया दीन ,माल, जान, इज़्ज़त, और अक़्ल
शराब ऐसी चीज है जिससे इंसान की अक़्ल ज़ाइल हो जाती है और फिर उसकी वजह से उसके दीन, जान-माल, इज्ज़त सब खतरे में आ जाते हैं अल्लाह तआला के रसूल जिन्होंने कभी अपनी जान के प्यासों पर लानत नहीं फरमाई लेकिन जिन बद बख्तों पर लानत फरमाई है उनमें शराबी भी शामिल हैं। एक हदीस में है अबू दाऊद में हजरत अमीर मआविया से रिवायत है फरमाते हैं हुज़ूर ﷺ ने फरमाया:
जब लोग शराब नोशी करें तो उन्हें कोड़े मारो, फिर करें फिर मारो ,फिर करें फिर मारो, और चौथी बार करें तो उनको कत्ल कर दो।

और एक हदीस में है हुज़ूर ﷺ ने फरमाया:
के तीन शख्स जन्नत में नहीं जाएंगे शराबी ,और अपने रिश्तेदारों से बदसलूकी करने वाला और जादू की तस्दीक करने वाला, और जो शराबी बे तौवा किए मर जाए अल्लाह तआला उसे वह ख़ूनो पीप पिलाएगा जो दोज़ख में फ़ाहिशा औरत की बुरी जगह से इस कदर बहेगा के एक नहर हो जाएगी दोज़खियों को उनकी शर्मगाह की बदबू अज़ाब पर अज़ाब होगी। वह सख्त बदबूदार गंदी पीप जो बदकार औरतों के शर्मगाह से बहेगी उसे उस शराबी को पीनी पड़ेगी।

अल्लाह तआला की पनाह इतना सख़्त अज़ाब है शराब के पीने वालों, अपनी जवानी, जान माल इज्ज़त बरबाद करने वालों अल्लाह से डरो और नापाक शराब के पीने से बाज़ आ जाओ।

शराब और मुसलमान:
जिस खुदा और रसूल ने शराब नोशी को कतयी तौर पर हराम करार दिया जिसको पेशाब की तरह नजिस नापाक बताया और शैतान का अमल करार दिया आज उसी अल्लाह और रसूल पर ईमान लाने वाले मुसलमान, इस्लाम के मानने वाले मुसलमान सबसे ज्यादा शराब नोशी और दूसरे नशावर चीजों में मुलव्विस हैं । और शराब पीकर नशे में लड़ाई झगड़े करते हैं और फसाद मचाते हैं। कतलो ग़ारतगरी का माहौल गर्म करते हैं। कभी-कभार कुफ्र की हद को तजावुज़ कर जाते हैं। खुद भी ज़लील और रुसवा होते हैं और दीन की बदनामी का सबब बनते हैं।

हाथ बे ज़ोर हैं इलहाद से दिल ख़ूगर हैं
उम्मती बाइस ए रुस्वाई ए पैगम्बर हैं

शराब के नुकसानात:
शराब और दूसरी नशे वाली चीजें इंसान की अकल खत्म कर देती हैं जिसकी वजह से मुआशरे में खराबी पैदा होती है और इंसान भी तरह-तरह के नुकसानात से दो-चार होता है। जिसकी खबरें अखबारों के जरिए आती रहती हैं।

एक्सीडेन्ट:
दौरे हाज़िर में रोडों पर जो हादसात पेश आते हैं और जितनी मौतें होती हैं ज़्यादातर शराब की वजह से होती हैं।

फ़साद व क़त्ल:
गाहे गाहे खबरें मौसूल होती हैं फलाँ जगह फसाद बरपा हो गया, फलाँ जगह लड़ाई हो गई फलाँ ने फलाँ को कत्ल कर दिया, बेटे ने बाप को ज़लील किया, मां की बेहुरमती की सब के पीछे अक्सर वजह शराब ही होती है।

इस्मतदरी (बलात्कार):
यह खबरें आती हैं लोग शराब पीकर ज़िनाकारी में मुलव्विस हो जाते हैं। नेक सीरत बच्चियों की आबरू रेज़ी करते हैं यहां तक के कुछ नाहंजार अपनी महरमों से बदसलूकी करने पर आमादा हो जाते हैं कुछ भी एहसास शर्म नहीं करते ।

तलाक:
दारूल इफ्ता में अक्सर मसाइल तलाक के आते हैं जिसमें अक्सर महज़ शराब पीकर तलाक दी होती है पहले शराब की मस्ती में बीवी को तलाक देते हैं जब बीवी निकाह से बाहर हो जाती है फिर इज़हारे अफसोस करते हैं।

इसी तरह बहुत नुकसनात हैं इसकी वजह से शरीयत ने हराम करार दिया लिहाजा हर मुसलमान पर इससे बचना लाज़िमी है। और जो इसमें मुलव्विस नहीं उन पर भी हस्बे ताकत लोगों को इससे रोकना ज़रूरी है।

चन्द मसाइल:
मसला:
फतवा यह है कि हर शय वाली पतली चीज यानी अंगूरी शराब और ताड़ी वगैरह मुतलक़न हराम है उनका एक कतरा भी पीना जायज नहीं.

आला हज़रत फ़रमाते हैं:
भांग, चरस, शराब सब हराम हैं मगर शराब सब में बदतर है।

नीज़ फरमाते हैं खमर (शराब) की हुरमत ज़रूरियात दीन से है। उसके एक कतरे की हुरमत का मुनकिर काफिर है। हां भांग वगैरह किसी चीज से नशे की हुरमत का मुनकिर गुमराह व मुखालिफ इज्मा है।

और लिखते हैं एक जगह शराब किसी क़िस्म की हो मुतलक़न हराम भी है और पेशाब की तरह नजिस भी। ब्रांडी हो ख़्वाह स्प्रिट ख़्वाह कोई बला। जिस दवा में उसका जस हो ख़्वाह किसी तरह उसकी आमेज़िश हो उसका खाना,पीना भी हराम उसका लगाना भी हराम, उसका बेचना भी हराम, तबीब के उसका इस्तेमाल बलाए मुब्तलाए गुनाह व आसाम यही अयम्मा इकराम का मज़हब सही व मोतमद है।

शराबी का ठिकाना:

हजरत मौलाना सदर अश शरिया रहमतुल्लाह अलेह बहारे शरीयत में नकल फरमाते हैं:

ग़ई जहन्नुम में एक वादी है जिसकी गर्मी और गहराई सबसे ज्यादा है। उसमें एक कुएं का नाम हुब हुब है जब जहन्नुम की आग बुझने पर आती है तो अल्लाह तआला उस कुएं को खोल देता है जिससे ब दस्तूर आग भड़कने लगती है। अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद

जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

यह कुआं बे नमाज़ियों और ज़ानियों और शराबियों और सूदखोरों और मां-बाप को तकलीफ देने वालों के लिए है अल अयाज़ वल हफ़ीज़

ग़ौर फरमाइए के शराब पीना कितना सख्त गुनाह है और कितना सख्त अंजाम है। अल्लाह तबारक व तआला हम सब को महफ़ूज़ रखे और अमल की तौफीक अता फरमाए।